लौकिक साईं बाबा - प्रतिलेख ०५.०८.२०१४

मॉस घाटी में

सादर प्रेम और आदर भाव के साथ हम लौकिक साईं बाबा का आह्वान करते हैं |

❝ मैं लौकिक साईं बाबा हूँ और यहाँ आकर बहुत प्रसन्न हूँ| निसंदेह: मैं यहाँ शुरू से ही था| आज आपकी ऊर्जस्विता बहुत दीप्तिमान और हलकी है और यह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है| मैं जानता हूँ कि आप हमेशा मेरा स्वागत करते हैं और मुझे यहाँ आमंत्रित करने के लिए मैं आपको धन्यवाद करता हूँ|

आज का मेरा सन्देश लम्बा नहीं है, फिर से यह एक आश्वासन का ही है - मेरा सन्देश एक परामर्श है कि जब भी आप चाहें आपको मदद मिलेगी... ... बस आपको सिर्फ मुझे बुलाना है और मैं आपके पास स्वयं आ जाऊँगा या एक दूत भेज दूँगा| मैं आऊँगा - परन्तु यह घटना पर निर्भर करता है | लेकिन आप जब भी हमें बुलाना चाहें (यदि आप चाहते हैं) तो बेझिझक बुला सकते हैं| मैं इसे इस तरह कहना चाहूँगा - हम कई सारे लोग हैं|

मैं चाहूँगा कि आप उच्च श्रेणी के ब्रह्मांडीय जीवों को ही बुलाएँ| वे विभिन्न आकार व रूप के हो सकते हैं| आपने अपने मन की आँखों से उनको देखने की क्षमता विकसित कर ली होगी - यह बहुत ही अच्छी बात है| डरिये मत बस इसकी आदत डाल लीजिये|

क्योंकि वो आकार वास्तविकता नहीं है - यथार्थ है, तो सिर्फ चेतना - और वही महत्वपूर्ण है | बस यही आपको किसी अपसामान्य विषय के सन्दर्भ में काम करते समय, समझने की आवश्यकता होगी|

जब मैं यह कहता हूँ कि पृथ्वी पर जो जाती रहती है वे इंसान हैं - ऐसा सोचिये कि यही दुनिया सामान्य है - किन्तु मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ - कि यह दुनिया वास्तविक नहीं है| और आप यहाँ - यदि ऐसा कहें - एक अभियान पर आये हैं, सीखने, अनुभव लेने, अपना योगदान देने, और एक दुसरे की मदद करने - अपनी नैतिकता बढ़ाने, और यही सबसे महत्वपूर्ण है|

क्योंकि नैतिकता ही चरित्र का निर्माण करती है और यही आपका लक्षय है| यह पूर्णत: दिव्य ऊर्जा की प्रेम और प्रकाश में विद्यमान है|

उच्चस्तर से - परमेश्वर से, जो हम सब का निर्माता है| मैं चाहूँगा कि आप इस पर विचार करें - और फिर ध्यान करें| उस दौरान यदि कोई विचार आपके मन में उभरता है तो उस पर भी विचार करें| क्योंकि यह सन्देश आपकी आत्मा से आया है जो आपको विचार करने के लिए कह रही है - कि यह सन्देश आपके मन में क्यों उस समय ही उभरा|

हर एक प्राणी को विकसित होने और अपने आप को समझने का अधिकार है - कि हम कौन हैं और यहाँ किस मकसद से आये हैं|

और यह क्षमता आपके भीतर है ... ... जो सीखती है - और आपको यह समझने में मदद करती है कि आप असल में कौन हैं| कोई भी आपके लिए यह कह नहीं सकता - और ना ही कुछ कर सकता है|

मुझे आशा है कि मैं अपने कहने का तात्पर्य समझा पा रहा हूँ | दूसरे शब्दों में कहें - अपने हर कथन व करनी की

ज़िम्मेदारी लें| जो भी आपके मनोभाव में प्रतिक्रिया हैं उन्हें देखिये -उनके बारे में विचार करें| यदि वे आपको को दर्द देते हैं - जा□करिये ! यदि वे दूसरों को कष्ट देते हैं, तो उनसे पूछिये कि वे ऐसा क्यों करना चाहते हैं|

अपने हृदय में प्रेम ढूँढिये ... ... पूरा ब्रह्माण्ड ... ... प्रेम है| यह करुणा है | यही उच्च स्तर का सही स्रोत है|

यह याद रखिये - यह याद रखिये|

मेरे जाने से पहले मैं लोगों को धन्यवाद देना चाहू□ जिन्होंने मुझे पत्र लिखें हैं और अपने विचार मेरे साथ बाटें हैं और मैं चाहू□ कि मेरे आज के सन्देश पर ध्यानपूर्वक विचार करें|

तो मैं आपको धन्यवाद देता हूँ| मुझे यहा□ बुलाने के लिए धन्यवाद और अब मैं आपको अपने प्रेम के साथ आपसे विदा लेता हूँ,

मैं, परमेश्वर आपको आशीर्वाद देता हूँ| ”